



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	28.8.22	4	5.8

## चारे की मांग व आपूर्ति के बीच अंतर को समाप्त करना बहुत जरूरी : वीसी

कहा, पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित हो

भास्कर न्यूज़ | हिस्सार

पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है।

यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्यतिथि बोल रहे थे। इस कार्यशाला में हकूम, लुमास व एनडीआरआई, करनाल



एचएयू के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों, प्रतिभागियों ने भाग लिया।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उम्दा कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चारा

फसलों की 51 किस्में विकसित की हैं। चारा अनुभाग द्वारा विकसित किस्मों में ज्वार, लोबिया, जई, बरसीम व रिजका की किस्में मुख्य तौर पर अधिक हरा चारा देने वाली, ज्यादा प्रोटीन मात्रा व पाचनशीलता युक्त हैं जो पशुओं के लिए ज्यादा लाभदायक हैं।

भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्र ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन

को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नोडल ऑफिसर 'निआफटा', डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहताश सिंह व सह निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आरएस सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की सलाह दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. योगेश जिंदल ने हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा सहित चारा अनुभाग के वैज्ञानिक एस आर्य, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी. कुमारी, रवीश पंचटा, नीरज खरोड़ आदि उपस्थित रहे।





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

पंजाब केसरी

28-8-22

2

1-3

## पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए चारे की मांग व आपूर्ति के बीच अंतर को समाप्त करना बहुत जरूरी: प्रो. काम्बोज

हिसार, 27 अगस्त (ब्यूरो): पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है।

पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है, जिसके लिए जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है।

यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

इस कार्यशाला में हकूवि, लुवास व एन.डी.आर.आई., करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण



कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्धव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा ना मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में समय-समय पर जागरूक करने व उनको उच्च गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करनी जरूरी है।

उन्होंने धान व गेहू के बचे फसल अवशेषों को चारे के रूप में पशुओं को खिलाए जाने हेतु जरूरी उपचार की तकनीक को किसानों के बीच प्रचारित करने पर बल दिया और कहा कि इससे फसल अवशेषों को जलाने की समस्या से भी निपटा जा सकेगा।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उम्दा कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चारा फसलों की 51 किस्में विकसित की हैं। भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्र ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले।

नोडल ऑफिसर 'निआफटा', डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा सहित चारा अनुभाग के वैज्ञानिक एस.आर्य, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी. कुमारी, रबीश पंचटा, नीरज खरौड़ आदि उपस्थित रहे।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

15/11/2017

28.8.22

4

1-4

### 11 प्रतिशत हरे चारे व 23 प्रतिशत सूखे चारे की कमी

जागरण संवाददाता, हिसार: पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए जल्दी कदम उठाना बहुत आवश्यक है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने चारे की कमी की तरफ विज्ञानियों का ध्यान आकर्षित किया। वह चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ



एचएयू ने कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए। • एचएयू

**गुणवत्तापूर्ण हरा चारा न मिलने के कारण पशुओं का दूध हो रहा कम**  
कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्धव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा ना मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है।

मिलकर राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने के लिए चारा संसाधन विकास योजना के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि जानकारी दे रहे थे।

कार्यशाला में एचएयू, लुवास

व एनडीआरआइ, करनाल के विज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

झांसी स्थित भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. अमरेश चंद्र ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे।

#### एचएयू ने चारे की 51 किस्मों की विकसित

अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारा फसलों की 51 किस्मों विकसित की हैं। चारा अनुभाग द्वारा विकसित किस्मों में ज्यार, लोबिया, जई, बरसीम व रिजका की किस्म मुख्य तौर पर अधिक हरा चारा देने वाली, ज्यादा प्रोटीन मात्रा व पाचनशीलता युक्त हैं जो पशुओं के लिए ज्यादा लाभदायक हैं।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अज्ञात समाचार	28.8.22	5	1-5

### पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए चारे की मांग व आपूर्ति के बीच अंतर को समाप्त करना जरूरी : प्रो. काम्बोज

हिसार, 27 अगस्त (विरेद वर्मा) : पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है। यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस कार्यशाला में हकूवि, लुयास व एनडीआरआई, करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फीडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्धव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा ना मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन

क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में समय-समय पर जागरूक करने व उनको उच्च गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करनी जरूरी है। उन्होंने धान व गेहू के बचे फसल अवशेषों को चारे के रूप में पशुओं को खिलाए जाने हेतु जरूरी उपचार की तकनीक को किसानों के बीच प्रचारित करने पर बल दिया और कहा कि इससे फसल अवशेषों को जलाने की समस्या से भी निपटा जा सकेगा।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उम्दा कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चारा फसलों की 51 किस्में विकसित की हैं। चारा अनुभाग द्वारा विकसित किस्मों में ज्वार, लोबिया, जई, बरसीम व रिजका की किस्में मुख्य तौर पर अधिक हरा चारा देने वाली, ज्यादा प्रोटीन मात्रा व पाचनशीलता युक्त हैं जो पशुओं के लिए ज्यादा लाभदायक हैं। भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान,

झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्रा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नोडल ऑफिसर 'निआफटा', डॉ. पी. सर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहतारा सिंह व सह निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आरएस सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की सलाह दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. वीरेश जिंदल ने हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा सहित चारा अनुभाग के वैज्ञानिक एस आरव, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी. कुमारी, रवीश पंचटा, नीरज खरोड़ आदि उपस्थित रहे।





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समर उजाहा	28.8.22	3	2-8

## देश में चारे की 29% कमी, मांग व आपूर्ति के अंतर को खत्म करना होगा : कांबोज

कुलपति कांबोज ने 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित कार्यशाला में रखे विचार

माई सिटी रिपोर्टर



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में बैठक को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। संवाद

### लगातार बढ़ता जा रहा है मांग व आपूर्ति के बीच का अंतर

### चारा अनुभाग ने अभी तक 51 किस्में विकसित की

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उम्दा कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चारा फसलों की 51 किस्में विकसित की हैं। चारा अनुभाग द्वारा विकसित किस्मों में ज्वार, लोबिया, जई, बरसीम व रिजका की किस्में मुख्य तौर पर अधिक हरा चारा देने वाली, ज्यादा प्रोटीन मात्रा व पाचनशीलता युक्त हैं जो पशुओं के लिए ज्यादा लाभदायक हैं। भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्रा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नोडल ऑफिसर 'निआफटा', डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहताश सिंह व सह निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आरएस सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की सलाह दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. योगेश जिंदल ने हरियाणा

राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रौद्योगिकी के बारे में बताया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा सहित चारा अनुभाग के वैज्ञानिक एस आर्य, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी कुमारी, रवीश पंचटा, नीरज खरोड़ आदि उपस्थित रहे।

हिसार। पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए अभी से जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है।

यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने व्यक्त किए। वे चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्यतिथि बोल रहे थे। इस कार्यशाला में हकूवि, लुवास व एनडीआरआई, करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशु चिकित्सा विभाग के चिकित्सकों व रीजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा न मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकी के बारे में समय-समय पर जागरूक करने व उनको उच्च गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करनी जरूरी है। उन्होंने धान व गेहूँ के बचे फसल अवशेषों को चारे के रूप में पशुओं को खिलाए जाने हेतु जरूरी उपचार की तकनीक को किसानों के बीच प्रचारित करने पर बल दिया और कहा कि इससे अवशेषों को जलाने की समस्या से भी निपटा जा सकेगा।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
साज समाज	28.8.2022	--	--

### पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए चारे की मांग व आपूर्ति के बीच अंतर को समाप्त करना बहुत जरूरी: कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

प्रवीन कुमार

हिसार पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुसंधान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत घने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए जल्दी कदम उठाना बहुत आवश्यक है।

यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे चारा अनुभाग द्वारा भारतीय सरकार एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु छात्रों



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

संसाधन विकास योजनाओं के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में वतीर मुख्याधीन खेल रहे थे। इस कार्यशाला में हकूवि, लुवास व एनडीआरआई, कानपुर के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजल्ट पोइंड स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था खेती के साथ-साथ

पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा न मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में समझ-समझ पर जागरूक करने व इनको उच्च गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज को उपलब्धता भी सुनिश्चित करना जरूरी है। उन्होंने धान व गेहू के बचे फसल अवशेषों को चारे के रूप में पशुओं को खिलाए जाने हेतु जरूरी

उपचार की तकनीक को किसानों के बीच प्रचारित करने पर बल दिया और कहा कि इससे फसल अवशेषों को जलाने की समस्या से भी निपटा जा सकेगा।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उम्मीद कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चारा फसलों की 51 किस्में विकसित की हैं। चारा अनुभाग द्वारा विकसित किस्मों में ज्वार, लोबिया, सब्ज, बरसीम व रिजका की किस्में मुख्य तौर पर अधिक हरा चारा देने वाली, ज्यादा प्रोटीन मात्रा व पाचनशीलता युक्त हैं जो पशुओं के लिए ज्यादा लाभदायक है। भारतीय सरकार एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंदा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा

उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नेहरू अफेयर इन्विशुअरेंट्स डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहताश सिंह व सह निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. अशोक सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की प्रतीक्षा दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. योगेश किशन ने हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस्के पाहुजा सहित चारा अनुभाग के वैज्ञानिक एस अर्जुन, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी. कुमारी, स्वैश पंचटा, नीरज खरोड़ आदि उपस्थित रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पत्र	27.8.2022	--	--

## पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए चारे की मांग और आपूर्ति के बीच अंतर समाप्त करना जरूरी : प्रो. काम्बोज

सिटी पत्र न्यूज, हिसार। पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए कुशलतापूर्वक चारे को उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत घने चारे का उपयोग की जा रहा है। 1.23 प्रतिशत की दर से ही चारे की मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर अद्वैत रूप में अंतर बंद करना है जिसके लिए नर्सरी बांटेन उद्योग बहुत आवश्यक है।

यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कही। वे चार अनुभाग द्वारा भारतीय



प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यवाही को त्वरित करते हुए।

चरणगत एवं चारा अनुसंधान संस्थान, जहाँ के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चार उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा उत्पादन विकास योजना' के तहत कार्यक्रम की गई कार्यवाही में अंतर सुनिश्चित होना है। इस कार्यवाही में हनुमन्, तुलसी व

एन.डी.आर.आई, कानपुर के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सक विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजल्ट फीडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने धन दिया।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र को अभावग्रस्ता क्षेत्रों के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। सुखरत्नपूर्ण हरा चारा न मिलने के कारण पशुओं की तुल्य उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चार फसलों को

उच्च प्रोड्यूसिबिलिटी के बारे में सम्यक-समय पर अवगत करने व उनको उच्च गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीच की उपलब्धता भी सुनिश्चित करने जरूरी है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चार अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उच्च विधियों के विकास में उच्च कार्य किया है। इस अनुभाग ने अब तक चार फसलों को 51 किस्में विकसित की हैं। भारतीय चरणगत एवं चारा अनुसंधान संस्थान, जहाँ के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्र ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय स्तरित विधियों को मिलकर प्रसार करने होंगे तभी पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। जेडेल अधिकार

'निष्पत्ता', डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहित सिंह व सह निदेशक (सहिलकरो) डॉ. आरएस सेनगुप्ता ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की राय दी। सहसंचालक वैज्ञानिक डॉ. योगेश शर्मा ने हरियाणा राज्य में चार उत्पादन हेतु उच्च प्रोड्यूसिबिलिटी के बारे में कहा। इस अवसर पर कृषि विश्वविद्यालय के अधिकारियों डॉ. एमके पाहुवा सहित चार अनुभाग के वैज्ञानिक एम.आर. बजौरा, जगत शर्मा, सारंग, पी. कुमारी, रवीश पंचत, नीरज खरेडू और उपस्थित रहे।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पत्र	27.8.2022	--	--

# पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए चारे की मांग और आपूर्ति के बीच अंतर समाप्त करना जरूरी : प्रो. काम्बोज

सिटी पत्र न्यूज, हिसार। पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्तापूर्ण चारे को उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुसंधान के अनुसार भारतीय समय में देश में वार्षिक 11 प्रतिशत जो चारे की मांग 23 प्रतिशत चारे की मांग के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत चारे की कमी है। पशुधन की उत्पादकता में 1.23 प्रतिशत की दर से जो चारे की मांग को पूरा करने और आपूर्ति के बीच यह अंतर होने वाले समय में और बहुत बराबर है जिसके लिए जरूरी कार्य करना बहुत आवश्यक है।

डॉ. चारु चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. काम्बोज ने कहा: वे चारा अनुसंधान द्वारा भारतीय



डॉ. बी.आर. काम्बोज कार्यवाही को संक्षेप करते हुए।

चारागत एवं चारा अनुसंधान संस्थान, प्रयोग के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत जातीयता को मां कार्यवाही में कठोर सुकृतिविधि कोर रहे थे। इस कार्यवाही में इच्छा, सुचना व

एनटीआरआई, करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुवैद्यकीय विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजिनल फीडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने ध्यान दिया।

उन्होंने कहा कि इमर्जेंट क्षेत्र की अर्थव्यवस्था खोने के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण चारा न मिलने के कारण पशुधन की उत्पादकता घटने में आने आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों को

उत्पाद प्रौद्योगिकियों के बारे में सतत-समय भा उपलब्ध करने व उनको उचित गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज को उपलब्धता भी सुनिश्चित करने जरूरी है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने कहा कि विधायकत्व के चारा अनुसंधान में चारे वाली फसलों को उचित किस्मों के विकास में उद्यम करने किया है। इस अनुसंधान में अब तक चारा फसलों को 51 किस्मों विकसित की है। भारतीय चारागत एवं चारा अनुसंधान संस्थान, प्रयोग के निदेशक डॉ. अमरेंद्र चंद्र ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को उचित से अधिक लाभ मिले। वरिष्ठ अधिकारी

'निष्कर्ष', डॉ. पी. शर्मा ने चारे प्रतिभागियों का स्वागत किया। हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहित मिश्र व सह निदेशक (संश्लेषण) डॉ. अरविंद सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को उचित से उचित उपलब्ध करने की सलाह दी। सहकाय वैज्ञानिक डॉ. योगेश मिश्र ने हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन हेतु उच्च प्रौद्योगिकियों के बारे में कहा। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. पुराने पाटुना सहित चारा अनुसंधान के वैज्ञानिक एस.अर्जुन, अजय शर्मा, मधुसूदन, पी. सुशील, रवीश पंडित, नीरज खरेंद्र और जयशंकर रहे।





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	27.8.2022	--	--

## हकृति में हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत कार्यशाला का आयोजन पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए चारे की मांग व आपूर्ति के बीच अंतर को समाप्त करना बहुत जरूरी : प्रो. काम्बोज

### समाप्त हरियाणा न्यूज

हिसार। पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्तापूर्ण चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुसंधान के अनुसार किसान रासम में वार्षिक 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सूखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत घने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से ही गौ वृद्धि के साथ चारे और आपूर्ति के बीच यह अंतर उठाने वाले रासम में और बढ़ सकता है जिसके लिए जरूरी कदम उठाया बहुत आवश्यक है।

इस विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि चारा अनुसंधान द्वारा भारतीय चाराघाट एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत कार्यशाला की गई कार्यक्रमों में चारों मुख्यवर्गीय क्षेत्र रहे थे। इस कार्यशाला में हकृति, सुवास, व एनसीआरआई, कनका के वैज्ञानिकों, कृषि एवं विज्ञान कालाज विभाग के अधिकारियों,



पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजल्ट फेडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए चारे की मांग-साप मनुष्यत्व पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा या पिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा

फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में समय-समय पर सलाह करने व उनको उच्च गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीच की उपलब्धता भी सुनिश्चित करनी जरूरी है। उन्होंने चारा व गेहूँ के बचे फसल अवशेषों को चारे के रूप में पशुओं को विकसित करने हेतु जरूरी उपचार को तकनीक को किसानों के बीच प्रसारित करने पर भार दिया और कहा

कि इससे फसल अवशेषों को जलने की समस्या से भी निपटा जा सकेगा।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम जर्वाल ने कहा कि विश्वविद्यालय के चारा अनुसंधान ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उच्च कार्य किया है। इस अनुसंधान ने अब तक चारा फसलों की 51 किस्मों विकसित की है। चारा अनुसंधान द्वारा विकसित किस्मों में

जब, लॉबिया, जई, कसौरी व रिजका को किस्मों मुख्य और पर अधिक हरा चारा देने वाली, जलवा प्रौद्योगिकी या पंचनशीलता युक्त है जो पशुओं के लिए जलवा लाभदायक है। भारतीय चाराघाट एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. आरविंद चौध ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित विभागों को मिलकर प्रयत्न करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नोबल अधिवक्ता 'विश्वसत', डॉ. पी. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों को स्वागत किया। हरियाणा के कृषि एवं विज्ञान कालाज विभाग के सह निदेशक डॉ. गिरधरा सिंह व सह निदेशक (संशोधन) डॉ. अक्षय मोहनजी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभदायक करने की सलाह दी। स्वागत वैज्ञानिक डॉ. योगेश बिलन ने हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया।

इस अवसर पर कृषि विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रामेश चंद्रका शर्मा चारा अनुसंधान के वैज्ञानिक एम.अरुण, कालाज काल एएन. सरलाका, पी. कुमारी, सतीश चण्ड, संजय खोसड़ा और उपस्थित थे।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जमिनी 2022	27.8.2022	--	--

### गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक : कुलपति

हिसार/ 27 अगस्त/ रिपोर्टर

पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ताशील चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत हरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सुखे चारे के साथ-साथ लगभग 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए जरूरी कदम उठाना बहुत आवश्यक है। यह शब्द चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने चारा अनुभाग द्वारा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के साथ

मिलकर हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन बढ़ाने हेतु 'चारा संसाधन विकास योजना' के तहत आयोजित की गई कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि कहे। इस कार्यशाला में हकूचि, लुवास व एनडीआरआई, करनाल के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, पशुचिकित्सा विभाग के पशु चिकित्सकों व रिजनल फोडर स्टेशन के अधिकारियों सहित कुल 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था खेती के साथ-साथ पशुपालन पर निर्भर करती है। गुणवत्तापूर्ण हरा चारा न मिलने के कारण पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। इसके लिए पशुपालकों को चारा फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में समय-समय पर जागरूक

करने व उनको उच्च गुणवत्ता वाली चारा फसलों के बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करनी जरूरी है। उन्होंने धान व गेहू के बचे फसल अवशेषों को चारे के रूप में पशुओं को खिलाए जाने हेतु जरूरी उपचार को तकनीक को किसानों के बीच प्रचारित करने पर बल दिया और कहा कि इससे फसल अवशेषों को जलाने की समस्या से भी निपटा जा सकेगा। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने चारे वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास में बहुत उम्दा कार्य किया है। भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक डॉ. अमरेश चंद्रा ने कहा कि हरियाणा राज्य में चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए सभी संबंधित

विभागों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ मिले। नोडल ऑफिसर 'निआफटा', डॉ. पी शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सह निदेशक डॉ. रोहताश सिंह व सह निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आरएम सोलंकी ने चारा उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु पशुपालकों को अधिक से अधिक जागरूक करने की सलाह दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. योगेश जिंदल ने राज्य में चारा उत्पादन हेतु उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, वैज्ञानिक एस आर्य, बजरंग लाल शर्मा, सतपाल, पी कुमारी, रवीश पंचटा, नौरज खरोड़ आदि उपस्थित रहे।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष	26.8.2022	--	--

### कपास में गुलाबी सुंडी के नियंत्रण के लिए सामूहिक प्रयास करने की जरूरत: कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 26 अगस्त : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की समस्या पर किसान व कृषि वैज्ञानिक लगातार नजर बनाए हुए हैं। इसके समाधान के लिए सभी हितधारक मिलकर कार्य करें ताकि किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के कपास वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों व किसानों के लिए अनुसंधान निदेशालय द्वारा आयोजित मध्य-मौसम समीक्षा बैठक को बतौर मुख्यतिथि संबोधित कर रहे थे। कुलपति ने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के नियंत्रण के लिए हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा पंजाब और राजस्थान सहित हरियाणा और आसपास के राज्यों में कपास पर गुलाबी सुण्डी का व्यापक प्रसार चिंता का विषय है जिसको सामूहिक प्रयासों से नियंत्रित किया जा सकता है। पिछले साल हरियाणा

के 14 कपास उत्पादक जिलों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप देखा गया था। पंजाब के बठिंडा और मानसा जिलों में और राजस्थान के हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिलों में बीटी कपास पर गुलाबी सुण्डी की घटनाओं की रिपोर्ट उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त इस माह से रेतीली मिट्टी में उगाई गई कपास की फसल में पोषक तत्वों की कमी शुरू हो गई है। किसानों को जरूरत के हिसाब से पोषक तत्वों की कमी पूरी करनी चाहिए। इस समय गुलाबी सुंडी की निगरानी के साथ पोषक तत्वों के प्रयोग पर ध्यान देने की बहुत जरूरत होगी। उन्होंने उम्मीद जताई है कि यह समीक्षा बैठक कपास की फसल में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खड़ी के प्रकोप और कपास की पत्ती मरोड़ वायरस रोग के प्रबंधन के लिए कारगर साबित होगी। बैठक में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने हरियाणा राज्य में उगाई गई नरमा फसल की वर्तमान स्थिति को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की जबकि पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार और राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान, गंगानगर के वैज्ञानिक



डॉ. रूप सिंह मीणा ने अपने-अपने राज्यों में नरमा फसल की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सिरसा के संयुक्त निदेशक (कपास) डॉ. आर.पी. सिहाग ने हरियाणा में कपास के क्षेत्रफल, उत्पादन, विभिन्न बीजों की बिक्री एवं गुलाबी सुण्डी के प्रबंधन के लिए किए गए प्रयासों से अवगत कराया। केन्द्रीय कपास अनुसंधान केन्द्र, सिरसा के क्षेत्रीय अध्यक्ष डॉ. एस.के. चर्मा ने गुलाबी सुण्डी के प्रबंधन के लिए किए गए प्रयासों एवं उत्तरी भारत में नरमा में अच्छे उत्पादन हेतु रणनीति प्रस्तुत

की। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से नरमा फसल के अच्छे उत्पादन हेतु किए गए कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस अवसर पर बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी कपास फसल के लिए उनके द्वारा किए गए प्रचार-प्रसार के कार्यों से अवगत करवाया। बैठक के अंत में कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार यादव ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद व्यक्त किया। मंच का संचालन सहायक निदेशक डॉ. सुरेन्द्र यादव ने किया।